National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(62): 68-70
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

सुस्मिता कोरोथ एडवना
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
सेंट जोसेफ कॉलेज ऑफ कॉमर्स (स्वायत्त),
#163, ब्रिगेड रोड़, बेंगलुरु - 560025
कर्नाटक, भारत

Correspondence:
Dr. Susmitha Koroth Edavana
Assistant Professor,
Department of Hindi,
St. Joseph's College of Commerce
(Autonomous)
#163, Brigade Road, Bengaluru-
560025, Karnataka, India.

अनुवाद प्रशिक्षण की सार्थकता

डॉ. सुस्मिता कोरोथ एडवना

आमुख :

अनुवाद एक ऐसा माध्यम है जिसने ज्ञान-विज्ञान के भंडार को किसी विशेष देश की भौगोलिक सीमाओं से मुक्त कर अंतर्राष्टीय स्तर पर पहुंचाने में अत्येंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। साहित्य अथवा सूचना प्रधन लेखन में अनुवाद के विशेष चुनौती मानी जाती है, क्योंकि अनुवादक को न तो केवल भाषाई दक्षता चाहिए और न ही मात्र रूपांतरित करना होता है। वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में यह कार्य और भी कठिन हो जाता है, क्योंकि सरल शब्द-प्रतिस्थापन र्प्याप्त नहीं होता। यहाँ अनुवादक को मूल के प्रति निष्ठा और अर्थ की सटीकता, दांनों बनाए रखनी पड़ती है। आज सरकारी दफ़्तरों में अनेक बार अंग्रेज़ी पाठ को ही हिन्दी पाठकों द्वारा अधिक समझने योग्य माना जाता है, जिससे हिन्दी की प्रगति और प्रचार-प्रसार बाधित होता है। इसलिए यह आवश्यक है कि मूल पाठ की भावना को लक्ष्य भाषा में उसके अनुरूप अभिव्यक्ति मिले और अनुवादक इस पक्ष पर विशेष ध्यान दे।

सारांश :

यह आलेख अनुवाद की भूमिका, चुनौतियों और अवश्यकता पर केंद्रित है। अनुवाद ज्ञान-विज्ञान एवं साहित्य को भौगोलिक और भाषाई सीमाओं से मुक्त कर वैश्विक स्तर पर पहुंचाने का सशक्त साधान हैं साहित्यिक एवं वैज्ञानिक लेखन के अनुवाद में केवल शब्दों का प्रतिस्थापन पर्याप्त नहीं होता, बल्कि मूल भाव के अनुरूप लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्ति आवश्यक होती है। सरकारी कार्यप्रणाली में अंग्रेज़ी की अधिकता हिन्दी के विकास में बाधक है। अतः अनुवादक को मूल के प्रति निष्ठा रखते हुए भावार्थ-सटीकता और भाषा की स्वाभाविकता पर विशेष बल देना चाहिए।[1]

अनुवाद वैसे तो हज़ारों वर्षों से होता रहा हौ और यही एक ऐसा माध्यम रहा है जिसने ज्ञान-विज्ञान के भंडार को किसी देश विशेष की भौगोलिक सीमाओं से मुक्त करके विश्वव्यापी बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। कहा जाता है कि भारत का अधिकांश श्रेष्ठ साहित्य अरबी भाषा में हुए अनुवादों के माध्यम से यूरोप तथ अन्य देशों में पहुंचा। जिस प्रकार सभ्यता का सूर्य पूर्व में उदय हुआ और यहाँ के ज्ञान-प्रकाश ने विश्व के अनेक देशों को आलोकित किया उसी प्रकार कालचक्र के घूमने पर हमने देखा कि कालान्तर में पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति और साहित्य ने पूर्व को प्रकाश दिया। आज विकसित देशां में साहित्य और शास्त्र के क्षेत्र में जो कुछ हो रहा है, विकासशील देश उससे रोशनी ले रहे हैं। दिये से दिया जलता जा रहा है। किसी भी देश में हुआ वैज्ञानिक अनुसंधान अब उसी देश की सीमाओं में सीमित होकर नहीं रह जाता बल्कि अनुवाद के माध्यम से विश्व भर में फैल जाता है।

विधि :

ज्ञान साहित्य का उद्देश्य सूचना देना अथवा ज्ञान प्रदान करना होता है। उसमें तथ्यों को यथासंभव सुस्पष्ट और बोधगम्य भाषा में व्यक्त करना ही अभीष्ट होता है। काव्य में रचनाकार की कथनशैली जितनी

अधिक चमत्कृत होगी, उसकी जितनी अधिक तहें या परतें होंगी, एक ही बात के जितने अधिक विविध अर्थ निकलेंगे वह उतना ही सफल और महान माना जाएगा, जबकि शास्त्र वह जितनी निर्भान्त होगी, भषागत प्रयोग जितने कम होंगे उतना ही उसका कथन सुस्पष्ट और द्वयर्थता से मुक्त होगा। काव्य का सौन्दर्य उसकी अलभिव्यक्ति में है जबकि शास्त्र का उसकी सुस्पष्टता में। कैटफोर्ड की उक्ति "अनुवाद एक भाषा की पाठ्य-सामग्री को दूसरी भाषा की समतुल्य पाठ्य-सामग्री में प्रतिस्थापित करने की प्रक्रिया है"[2] या मुअल जॉनसन की परिभाषा "अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में भव को बना रखकर अंतरण करने का नाम है,"।[3] शास्त्र या सूचनापरक साहित्य के अनुवाद पर एकदम पूरी उतरती है क्योंकि उसमें अनुवादक को न भाषिक प्रयोग का अवसर मिलता है और न ही आत्माभिव्यक्ति का। उसे तो एक भाषा में अभिव्यक्त तथ्य को बिना कुछ जोड़े या छोड़े दूसरी भाषा में अन्तरित कर देना भर होता है। लेकिन ज्ञान-विज्ञान के साहित्य के अनुवादक जानते हैं कि ऐसे अंतरण या भाषान्तर इतना सरल भी नहीं है।

अनुवाद के लिए न केवल स्रोत और लक्ष्य भाषा का अच्छा ज्ञान अपेक्षित है बक्लि मूल के विषय पर भी उसका पूरा अधिकार होना चाहिए। यदि एक ओर अनुवादक से यह अपेक्षा की जाती है कि स्रोत भाषा का उसका ज्ञान सूक्ष्म होना चाहिए तो दूसरी ओर नाइडा जैसे विद्वान "लक्ष्य भाषा के व्यावहारिक ज्ञान" की शर्त को भी अनुवाद के लिए आवश्यक समझते हैं और यह ठीक भी है, क्योंकि स्रोत भषा के पाठ का अर्थग्रहण या अर्थवत्ता-बोध के बाद का चरण तो लक्ष्य भाषा में संप्रेषण का ही होता है।[4] इसलिए यदि अनुवादक में लक्ष्य भाषा में अपनी बात कहने की क्षमता नहीं है तो वह जो अनुवाद करेगा वह स्रोत भषा के कथ्य की प्रतिच्छाया मात्र होकर रह जाएगी। यदि एक ओर अनुवाद को मूल के प्रति निष्ठावान होना आवश्यक है तो दूसरी ओर लक्ष्य भाषा की प्रकृति की रक्षा करना और स्रोत भाषा के कथ्य को लक्ष्य भाषा के मुहावरे में ढ़ालना भी उसका धर्म है और यही अपेक्षाएं वास्तव में अनुवादक के कार्य को दुश्वार बना देती है। इसलिए अच्छे अनुवादक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह दोनों भाषाओं की प्रवृत्ति, उनकी वाक्य रचना, शब्दावली, मुहावरे, अभिव्यक्ति, शैली आदि का सम्यक् ज्ञान रख्ता हो।

परिणाम :

भारत सरकार के विभागों, कार्यालयों आदि में जिस प्रकार का कार्य होता है उसके विषय बहुविध और बहुत हद तक जटिल भी होते हैं। उसमें ज्ञान-विज्ञान से संबंधित लगभग सभी विषय आ जाते हैं जैसे राजनीति, अर्थशस्त्र, कानून, वित्त, विज्ञान, शिल्प-विज्ञान, संसदीय कार्य, जन-संचार साधन, सांस्कृतिक कार्य, शिक्षा, इन्जीनियरी, कृषि, उद्योग, वाणिज्य, लेखा, लेखापरीक्षा आदि। ऐसी स्थिति में विश्वविद्यालयों से शिक्षा प्राप्त करके निकले किसी भी विद्यार्थी से यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह अपर्युक्त सभी विषयों का विस्तृत तो क्या स्थूल ज्ञान भी रखता हो। दोनों भाषाओं का ज्ञान मात्र उसके द्वारा किए जाने वाले अनुवाद की सफलता का ज़ामिन नहीं हो सकता और इसलिए अवश्यक होता है कि वह मूल को समझने के लिए प्रारंभिक स्तर पर विषय विशेष के अनुज्ञान का सहारा ले और ऐसे शब्दों की संकल्पनाओं और उनके हिन्दी पर्यायों को जानने के लिए कोश की सहायता ले, यद्यपि उपलब्ध शब्दकोश किसी हद तक किसी शब्द के विभिन्न संदर्भों में प्रयुक्त होने पर उनके अर्थ या पर्याय देते हैं लेकिन कभी-कभी केवल पर्याय से काम नहीं चलता, क्योंकि शब्द विशेष की संकल्पना को जाने बिना अनुवाद नहीं किया जा सकता । इसलिए अनुवादक को थोड़ी-बहुत जानकारी कोशिविज्ञान की भी होनी ज़रूरी है। जहाँ कोश अपनी विविशिता प्रकट करें, वहाँ अनुवादक को मूल में प्रयुक्त शब्दा का अर्थ समझकर उसके लिए लक्ष्य भाषा में शब्द बनाने भी पड़ सकते हैं। सावधानी केवल यह बरती जानी चाहिए कि बनाया हुआ शब्द सामान्य पाठक के लिए अपरिचित होते हुए भी प्रयोग के बाद सार्थक लगे। मूल के प्रति निष्ठा अथवा यह कहें कि मूल की आत्मा को समझे बिना शब्द के लिए प्रति-शब्द रख देने मात्र से अुवाद न केवल कृत्रिम और भोंडा हो जाता है बल्कि उससे अर्थ का अनर्थ भी हो जाता है। आजकल सरकारी कार्यालयों में कहीं-कहीं ऐसी भाषा इस्तेमाल की जाती है कि पढ़ने वाले हिन्दी प्रेम होने के बावजूद बात को समझने के लिए अंग्रेज़ी पाठ को पढ़ना बेहतर समझते हैं। इस प्रकार राजभषा को कृत्रिम बनाना उसकी प्रगति और प्रचार-प्रसार को अवरुद्ध कर देना है। इसलिए मूल में जो कथ्य है उसका भाव लक्ष्य भाषा में उसकी प्रकृति के अनुरूप अभिव्यक्ति करने की आवश्यकता पर विशेष बल दिया जाना चाहिए।

ग्रन्थ सूची :

[1]मेरी अनुवाद यात्रा- विदेशी कविता के संदर्भ में: श्री रमेश कौशिक

[2]अनुवादक सर विलियम जोन्स- डॉ.ओ.पी.केजरीवाल

[3]अनुवाद और समतुल्यता का प्रश्न- डॉ. मीरकासिमोव

[4]अनुवाद में सृजनात्मक मौलिकता- डॉ. मासूमा आर. अली

[5]अनुवादः अनुभूति और आत्माभिव्यक्ति- डॉ.करनजीत सिंह

[6]आधुनिक साहित्य का अनुवादः डॉ. सतीश भार्गव

[7]हिन्दी में अनुदित उर्दू साहित्य- डॉ. सुधेश

[8]विदेशी विद्वानों की हिन्दी को देन- डॉ. गार्गी गुप्त, डॉ. ओमप्रकाश सिंहल, डॉ. तिलक राज वोहरा, श्रीमती संतोष खन्ना, डॉ. सतीश भार्गव, डॉ. पूरनचंद टंडन, संजीव ठाकुर तथा लता बंसल

[9]हिन्दी में अनूदित विदेशी कविता- डॉ. दिविक रमेश

[10]मशीनी अनुवाद- हिन्दी की कोशीय क्रियाओं का विश्लेषण- श्री विजय मल्होत्रा

[11] हिन्दी में विदेशी कविता- श्री जगदीश चतुर्वेदी

[12] पश्चिम में अनुवाद कला के मूल श्रोतः एक मूल्यांकन- डॉ. ललितमोहन बहुगुणा

[13] हिन्दी में अनूदित जर्मन साहित्य- श्री महेश दत्त

[14] अनुवाद और सृजनः कहानी के संदर्भ में- श्रीमती संतोषा खन्ना

[15] साहित्यानुवाद की कलाः विदेशी साहित्य के अंग्रेज़ी अनुवाद- डॉ. अरुणा चक्रवर्ती

[16] अनुवादक के दुःख एवं पीड़ाएं - श्री आर. के. मूर्ति

[17] भारतीय कविता का अनुवादः कुछ व्यावहारिक समस्याए- श्री शिव प्रकाश

[18] हिन्दी के प्रतिष्ठित काव्यानुवाद- डॉ. सुधेशा

[19] अंग्रेजी फ़िल्मों में उप शीर्षकः अनुवाद के संदर्भ में- डॉ. अरुणा प्रकाश

[20] अनुवाद अध्ययन की दिशाए- प्रो.जी. गोपीनाथन

[21] अनुवाद अध्ययन की विशिष्ट दिशाएं – प्रो.जी. गोपीनाथन

[22] अनुवाद की अनुवर्ती कार्यक्रमः मूल्यांकन एवं प्रचार- डॉ. विश्वनाथ अय्यर, डॉ. अवधेश कुमार श्रीवास्तव

[23] अनुवाद संबंधी वक्तव्य- प्रो.बी.वै. ललितांबा

[24] आलोचनात्मक कृतियों में अनुवाद की रचना प्रक्रिया- डॉ. ओम प्रकाश शर्मा 'प्रकाश'

[25] राजभाषा के संदर्भ में अनुवाद के विविध आयाम - डॉ. नारायण दत्त पालीवाल

[26] रचनात्मक सात्यि और पुनर्सृजन- डॉ. तनवीर अहमद अली

[27] बांगला और गुजराती साहित्य के बीच आदान प्रदान - डॉ. रणजीत कुमार साहा

संदर्भः

1 अनुवादक को मूल के प्रति निष्ठा रखते हुए विशेष रूप से भावार्थ-संवहन तथा भाषा की स्वाभाविकता पर बल देना चाहिए।

2 कैटफोर्ड का मत है कि अनुवाद मूलतः एक भाषा की पाठ-संरचना को दूसरी भाषा की समतुल्य पाठ-संरचना में स्थापित करने की क्रिया है।

3 अनुवाद में शब्दार्थ की निष्ठा का तात्पर्य यह है कि मूल भाषा के किसी भी शब्द का अर्थ उसकी संदर्भानुसार, व्याकरणिक और सांस्कृतिक विमर्शों के अनुरूप, लक्ष्य भाषा में यथोचित रूप से प्रतिपादित किया जाए।"

4 'अनुवाद' केवल किसी भाषा से दूसरी भाषा में शब्दों का प्रत्यक्ष रूपांतरण नहीं है, अपितु यह मूल भाषा की संरचना, भाव और सांस्कृतिक प्रसंग के अनुरूप लक्षित भाषा में अर्थ एवं शैली का सम्यक् संवहन भी है। इसलिए, यह कहा जा सकता है कि अनुवाद में केवल व्याकरणिक और शब्दार्थिक समता ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक अनुकूलता और भाव-संवेदन का भी समावेश होता है।"